





मेरा पड़ोसी कौन है?

लूका 10:25-37

यीशु के दृष्टांत

यदि आपके दर्शक नाट्य प्रस्तुति का आनंद लेते हैं, तो यह एक अच्छी कहानी होगी जिसे अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है।

कहानी की शुरुआत एक वकील से होती है जो यीशु के पास आता है और उन्हें लुभाने की कोशिश करता है।

लोग हमेशा यीशु को किसी न किसी गलत काम में फंसाने की कोशिश करते रहते थे। फरीसी और शास्त्री कानून के विद्वान थे और वे यीशु का न्याय कानून की अपनी व्याख्या के आधार पर करते थे। जब उनके विचार उनसे मेल नहीं खाते थे, तो वे क्रोधित हो जाते थे और अंततः उनके आरोपों के कारण ही यीशु की मृत्यु हुई।

वकील ने यीशु से पूछा, "अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?"

यीशु ने प्रश्न का उत्तर प्रश्न से ही दिया, जिससे वह व्यक्ति अपने विचारों और इरादों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश हो गया। यीशु ने उससे पूछा कि व्यवस्था में क्या लिखा है, और वकील से पूछा कि वह उसकी व्याख्या कैसे करता है।

चर्चा करना:

आपके विचार से इस प्रश्न का उत्तर क्या है?

वकील मूसा की व्यवस्था को जानता है, और तुरंत व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यव्यवस्था 19:18 से उदाहरण देकर उत्तर देता है:

"तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी शक्ति और अपने पूरे मन से प्रेम करो, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।"

क्या यह वकील सही है? क्या उसने प्रश्न का सही उत्तर दिया?

हाँ। सुसमाचार में एक बार एक फरीसी, जो एक वकील था, ने यीशु से पूछा कि सबसे बड़ी आज्ञा क्या है। यीशु ने ठीक वही उत्तर दिया (मत्ती 22:36-40)।

किसी व्यक्ति के सभी उत्तर सही हो सकते हैं, लेकिन अगर उसके हृदय में शुद्ध नीयत नहीं है तो इसका कोई महत्व नहीं है। ईश्वर हमारे विचारों को जानता है और वह हमारे बाहरी कार्यों के अलावा हमारे हृदय की नीयत को भी देखता है।

चर्चा करना:

धर्म होने का क्या अर्थ है?

एक व्यक्ति आत्मधर्म हो सकता है।

यह ऐसा व्यक्ति होगा जो अपनी काबिलियत पर गर्व करता है, चाहे वह वास्तविक हो या सिर्फ दूसरों को दिखाने के लिए किया गया दिखावा।

सच्ची धार्मिकता का अर्थ है ईश्वर के साथ सही संबंध बनाए रखना।

इसका अर्थ है कि आप परमेश्वर के सामने निर्दोष, बेदाग और दोषरहित हैं। धार्मिकता ऐसी चीज नहीं है जिसे कर्मों से कमाया जा सके या हासिल किया जा सके। धार्मिक होने का एकमात्र तरीका विश्वास है। हमें अपनी धार्मिकता को परमेश्वर का उपहार मानना चाहिए, जिसे हम केवल यीशु मसीह में अपने विश्वास के द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं (रोमियों 3:22; 4:5; 4:13; 5:17; 9:30; इफिसियों 2:9)।

धार्मिकता का हमारा उपहार मसीह और उसके राज्य के प्रतिनिधि होने की ज़िम्मेदारी के साथ आता है।

मसीह के राज्य में, अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना और दूसरों से प्रेम करना पहली प्राथमिकता है, और उनके राज्य के नेता वे हैं जो दूसरों की सेवा करते हैं।





मेरा पड़ोसी कौन है?

यीशु उस व्यक्ति के उत्तर से संतुष्ट हुए और बोले, "तुमने सही उत्तर दिया है; ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे।" लेकिन वकील स्वयं को सही ठहराने की कोशिश कर रहा था। वह स्वयं को सिद्ध करना चाहता था, और यह दिखाना चाहता था कि वह अपने आप में धर्मी है। इसलिए उसने और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए यीशु से पूछा,

मेरा पड़ोसी कौन है?

यीशु एक कहानी सुनाकर जवाब देते हैं:

"एक आदमी यरूशलेम से येरीको गया..."

ऐतिहासिक रूप से, यीशु एक वास्तविक सड़क की बात कर रहे थे, और यह कहानी एक वास्तविक संभावना को दर्शाती है। यरूशलेम से जेरिको जाने के लिए एक मुख्य सड़क थी। यह सड़क कुछ हद तक सुनसान थी, और रास्ते में कई गुफाएँ और छिपने की जगहें थीं। इस सड़क पर अक्सर ज्यादा आवागमन नहीं होता था, इसलिए चोर और लुटेरे गुफाओं और चट्टानों के पीछे छिपकर यात्रियों से चोरी करते थे।

इस व्यक्ति पर चोरों ने हमला किया था।

उन्होंने उसके कपड़े चुरा लिए, शायद उसके पास जो कुछ भी था, सब कुछ चुरा लिया, उसकी पिटाई की और उसे अधमरा हालत में सड़क किनारे छोड़ दिया।

चर्चा करना:

यह कैसा होगा? यह तो डरावना होगा।

चोर चट्टान के पीछे से निकलकर आप पर हमला करते हैं, आपके कपड़े समेत सब कुछ छीन लेते हैं, और इतना ही नहीं, वे आपकी पिटाई भी करते हैं और आप मदद के लिए कहीं जा भी नहीं पाते।

बिना कपड़ों के आपको शर्मिंदगी और अपमान महसूस होता है।

आप बुरी तरह घायल हैं, चोर आपको मरा हुआ समझकर छोड़ गए हैं। आपके पास पैसे नहीं हैं, न ही मदद मांगने का कोई ज़रिया है, और न ही किसी को मदद के लिए पैसे देने का।

आप पूरी तरह से असहाय हैं और अजनबियों की दया पर निर्भर हैं।

एक पादरी सड़क पर चलते हुए आता है।

उस दौर के धार्मिक समाज में, यह व्यक्ति आज के पादरी या बिशप के समान होता। लोग इस व्यक्ति को नेक और पवित्र समझते। स्वाभाविक रूप से वह सही काम करता और उस व्यक्ति की मदद करता।

लेकिन पुजारी ने क्या किया? क्या उसने घायल व्यक्ति को देखा? हाँ, उसने देखा, लेकिन पुजारी मदद के लिए नहीं रुका। वह न केवल नहीं रुका, बल्कि उसने ऐसा दिखाया जैसे उसने उसे देखा ही न हो और वह आगे बढ़ गया। अन्य सड़क के किनारे।

चर्चा करना:

आपको क्या लगता है कि वह पादरी अपने मन में क्या सोच रहा था?

यह तो असंभव सा लगता है। लेकिन यहां कोई और आ रहा है!

इसके बाद एक लेवी वहां से गुजरता हुआ दिखाई देता है।

यह आज के चर्च के नेता की तरह होगा; कोई ऐसा व्यक्ति जो चर्च में काम करता है या सिखाता है। यह वह व्यक्ति होना चाहिए जिसे सही-गलत का ज्ञान हो, और जिसे एक "अच्छा व्यक्ति" माना जाता हो।

लेवी वहां से गुजरा, उस लेवी ने उस आदमी को देखा और फिर दूसरी तरफ से निकल गया। हमें नहीं पता कि घायल आदमी ने उसे देखा या नहीं, या वह बेहोश था या दर्द से कराह रहा था और मदद मांग रहा था। हम बस इतना जानते हैं कि लेवी ने कोई सहायता नहीं की और दूसरी तरफ से चला गया।





मेरा पड़ोसी कौन है?

चर्चा करना:

आप क्या करेंगे? आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचते हैं जो पुजारी और लेवी की तरह व्यवहार करता है?

अब तो स्थिति बिल्कुल निराशाजनक लग रही है।

लेकिन, अंत में एक और व्यक्ति आता है। यह व्यक्ति एक परोपकारी है।

यहूदियों को सामरियों से लगाव नहीं था। यहूदी तो इस्राएल के लोग थे, लेकिन अधिकांश सामरी आधे यहूदी और आधे गैर-यहूदी थे। यहूदियों को गैर-यहूदियों से विवाह न करने की शिक्षा दी गई थी, इसलिए इन लोगों को उनकी मिश्रित नस्ल होने के कारण नीची नज़र से देखा जाता था; वे शुद्ध नहीं थे। उनके धार्मिक विश्वास मिलते-जुलते थे, लेकिन भिन्न भी थे, और सैकड़ों वर्षों से सामरियों और यहूदियों के बीच कटु संबंध रहे थे। ऐसे लोगों को कोई भी अपना पड़ोसी होने की उम्मीद नहीं कर सकता था।

यह दयालु व्यक्ति यात्रा पर था, और रास्ते में उसे एक अधमरा व्यक्ति मिला और उस पर दया आ गई।

करुणा को एक आंतरिक वाणी के रूप में वर्णित किया जाता है, जो सहानुभूति या दया से प्रेरित होती है। इस प्रकार की करुणा आपको कार्य करने, मदद करने के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। जब यीशु ने लोगों को चंगा किया, तो अक्सर कहा जाता है कि वे "करुणा से प्रेरित" थे।

उस भले इंसान ने सिर्फ उस आदमी की मदद ही नहीं की, बल्कि उससे कहीं बढ़कर काम किया। उसने अपने सामान का इस्तेमाल करते हुए उस आदमी के घावों पर पट्टी बांधी।

चर्चा करना:

उसके पास यात्रा के लिए तेल और शराब थी, और उसने ये दोनों चीजें उस आदमी पर डाल दीं। उसने ऐसा क्यों किया होगा?

शराब एक प्रकार का अल्कोहल है और यह एक प्राकृतिक कीटाणुनाशक के रूप में काम करती है। यह रोगाणुओं को मारती है और शुद्ध करती है। तेल एक मरहम होता और उपचार में सहायक होता।

इसके बाद, सामरी ने उस आदमी को अपने जानवर पर बिठा दिया।

उसका जानवर संभवतः एक गधा था; इसका मतलब है कि उस भले आदमी को बाकी का रास्ता पैदल चलकर उस आदमी को सहारा देना पड़ा और यह सुनिश्चित करना पड़ा कि वह जानवर से गिर न जाए। फिर वह उस आदमी को एक सराय या होटल जैसी किसी जगह ले गया और वहाँ उसकी देखभाल की। उस भले आदमी को अगले दिन जाना था, इसलिए उसने सराय के लोगों को पैसे दिए और उनसे घायल आदमी की देखभाल करने का अनुरोध किया। उसने उनसे कहा कि अगर खर्चे दिए गए पैसे से ज़्यादा हुआ, तो वह अगली बार आने पर उन्हें लौटा देगा। ऐसा लगता है कि उस भले आदमी का सराय के लोगों से कोई रिश्ता था; शायद वह अक्सर यहाँ आता-जाता था। ऐसा लगता है कि वे उसे जानते थे और उस पर भरोसा करते थे क्योंकि वह किसी को उनकी देखभाल में छोड़कर अगली बार आने पर ज़्यादा पैसे देने का वादा कर रहा था।

हमेशा अप्रत्याशित बातें ही बताया करता था।

उनकी शिक्षाएँ अक्सर दूसरों की सोच से बिल्कुल विपरीत होती थीं। इस कहानी को सुनने वाले लोग शायद यही सोचते होंगे कि "अच्छा पड़ोसी" तो किसी फरीसी का ही नाम होगा। फरीसियों को "सबसे धर्मी" लोगों के रूप में सम्मान दिया जाता था। लेकिन इस बात को उलट कर यह कहना कि सामरी जैसा अवांछित व्यक्ति सच्चा पड़ोसी था?

पड़ोसी की परिभाषा की यह एक निंदनीय व्याख्या थी।

फिर यीशु अपनी कहानी एक और प्रश्न के साथ समाप्त करते हैं। वे निर्णय लेने का प्रश्न फिर से उस व्यक्ति पर छोड़ देते हैं। वे उससे पूछते हैं,

"इन तीनों में से आपके विचार से कौन उस व्यक्ति का पड़ोसी था जो चोरों के बीच पकड़ा गया?"





मेरा पड़ोसी कौन है?

और उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "जिसने उस पर दया दिखाई।"

यीशु ने बस इतना ही जवाब दिया, "जाओ और वैसा ही करो।"



यीशु हमेशा अप्रत्याशित काम करते और बातें कहते थे।

इसलिए बहुत से लोगों को यह विश्वास करना मुश्किल लग रहा था कि वह मसीहा हैं। उन्होंने कानून की व्याख्या उस तरह से नहीं की जिस तरह से वे करते थे। उन्होंने सब के दिन भी लोगों को चंगा किया, उन्होंने समाज से बहिष्कृत लोगों के साथ संबंध बनाए, उन्होंने पापियों के साथ भोजन किया।

लोगों को यह समझ नहीं आया कि सभी कानून दो आज्ञाओं में समाहित हैं: अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से प्रेम करना; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।

अपने पूर्ण स्वरूप में यह व्यवस्था इस उद्देश्य को पूर्णतः पूरा कर सकती थी। परन्तु लोगों ने व्यवस्थाओं को आत्म-धार्मिकता का मार्ग बना लिया था, और यह दिखाने का जरिया बना लिया था कि वे कितने अच्छे हैं, और परमेश्वर की बजाय स्वयं को महिमा प्रदान करते थे। वे दूसरों का सम्मान उनके बाहरी कार्यों के आधार पर करते थे, परन्तु यीशु ने उनके हृदयों को देखा और उनके कार्यों के पीछे छिपे उद्देश्यों को उजागर किया।

यीशु से सवाल करने वाला वकील कानून के अक्षरशः पालन के आधार पर न्याय करने की कोशिश कर रहा है। वह पूछता है, "मेरा पड़ोसी कौन है?" वह कानूनी जवाब चाहता है, ताकि वह उचित और वैध तरीके से अपने कर्तव्य का आकलन कर सके।

लेकिन वह इस आज्ञा के मूल अर्थ को पूरी तरह से समझने में चूक जाता है।

यह किसी की मदद करने के बारे में नहीं है, बल्कि दूसरों के प्रति सच्चा प्रेम और करुणा रखने के बारे में है। यीशु ने इस कहानी में पूरी बात को पलट दिया और एक चौंकाने वाला मोड़ दिया, जिसमें उन्होंने सबसे अप्रत्याशित व्यक्ति को ही सच्चे प्रेममय पड़ोसी के रूप में प्रस्तुत किया।

पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

33. दरवाजा

1. दरवाजे से कौन अंदर आता है?
2. भेड़ें किसका अनुसरण करती हैं?
3. क्या भेड़ें किसी अजनबी का पीछा करेंगी? क्यों या क्यों नहीं?
4. इससे यह पता चलता है कि अगर हम यीशु को जानते हैं तो हम किन बातों को पहचान पाएंगे?

यूहन्ना 14:6

यीशु ने उससे कहा, “मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास नहीं आता।

34. मेरा पड़ोसी कौन है?

मत्ती 25:35-40 पढ़ें

1. यीशु ने कहा, मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन दिया?
2. मुझे प्यास लगी थी और तुमने मुझे पानी पिलाया?
3. मैं अजनबी था और?
4. मैं बीमार था और आप?
5. मैं जेल में था और आप?
6. जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो हम किसके लिए ऐसा करते हैं?

मत्ती 22:37-39

यीशु ने उससे कहा, “‘सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये।’ यह सबसे पहला और सबसे बड़ा आदेश है। फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है: ‘अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।’

35. दुष्ट सेवक

1. यीशु ने कितनी बार कहा कि हमें क्षमा करने की आवश्यकता है? समझाइए।
2. मालिक ने उस व्यक्ति को क्या दिया जिस पर बहुत बड़ी रकम का कर्ज था?
3. उस आदमी ने क्या किया जब उसके एक कर्मचारी पर उसका थोड़ा सा पैसा बकाया था?
4. अगर हम दूसरों को माफ नहीं करेंगे तो ईश्वर क्या करेगा?

मरकुस 11:26

किन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग में स्थित पिता तुम्हारे पापों को भी क्षमा नहीं करेगा।”

36. खोई हुई भेड़

1. चरवाहा कितनी भेड़ें पीछे छोड़ गया?
2. उसने बाकी भेड़ों को कहाँ छोड़ा?
3. खोई हुई भेड़ मिलने के बाद वह उसे कहाँ ले गया?
4. यीशु ने कहा कि जब कोई पश्चाताप करता है तो स्वर्ग में क्या होता है?

यशायाह 53:6

किन्तु उसके इतना करने के बाद भी हम सब भेड़ों की तरह इधर—उधर भटक गये। हममें से हर एक अपनी—अपनी राह चला गया। यही वास्तविकता हमें हमारे अपराधों से मुक्त कर दिये जाने के बाद और हमारे अपराध को अपने सेवक से जोड़ देने पर भी हमने ऐसा किया।

